नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो.9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 23.01.2019

प्रकाशनार्थ

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का नाम भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के क्षितिज पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले रणबांकुरों के राजकुमार थे। ***वास्तव में बाबू सुबाष राष्ट्रनायक होने के साथ–साथ भारतीय जनमानस के जननायक भी थे।*** यद्यपि कि काँग्रेंस की शीर्ष कामेटियों के साथ उनका वैचारिक विरोधाभास जग जाहिर है, तथापि काँग्रेस का शीर्ष नेतृत्व भी कहीं न कहीं बाबू सुभाष के व्यक्तित्व से दबता हुआ दिखाई देता है। नेता जी के राजनैतिक चिंतन पर चितरंजन दास, राष्ट्र दर्शन पर महर्षि अरविन्द तथा आध्यात्मिक चिंतन पर रामकृष्ण परमहंस एवं स्वामी विवेकानन्द का प्रभाव परिलक्षित होता है। ऐसे व्यक्तित्व के धनी होने के बावजूद स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कमजोर राजनैतिक इच्छाशक्ति एवं कम्यूनिस्ट इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास में उन्हें वह स्थान नहीं दिया जिसके कि वे वास्तविक अधिकारी थे। उक्त बातें दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 हिमांशु चतुर्वेदी ने महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में भारत–भारती पखवारा के अन्तर्गत सुभाष चन्द बोस जयन्ती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कही।

प्रो0 चतुर्वेदी ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि 1945–46 में भारत जब जबर्दस्त साम्प्रदायिकता के गिरफ्त में था, वामपंथ चरम पर था, जिन्ना–नेहरू मतभेद जग जाहिर हो चुका था और देश विभाजन की लकीर खींची जा चुकी थी, ऐसे में यह सुभाष बाबू की व्यापक लोकप्रियता का ही प्रभाव था कि वैचारिक धरातल पर विरोध होने के बावजूद आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार सैनिकों के मुकदमों की पैरवी में नेहरू, जिन्ना सहित देश के समस्त प्रतिष्ठित अधिवक्ता एक साथ खड़े हुए दिखाई देते हैं। वर्धा सम्मेलन में स्वतंत्र भारत की तस्वीर कैसी होनी चाहिए? इस विषय पर जब महात्मा गांधी ने देश के कुछ प्रतिष्ठित और चुने हुए लोगों को बुलाया तो सुभाष बाबू के विचारों से सहमत न होने के बावजूद महात्मा गांधी को भी जन समूदाये के दबाव को ध्यान में रखकर उन्हें भी आमंत्रित करना पड़ा और सुभाष बाबू बैठक में उपस्थित भी हुए। बाबू सुभाष यदि चाहते तो आई0सी0एस0 की नौकरी, जिसमें कि उनका चयन हो चुका था, उसे स्वीकार करके वह ऐशो आराम की जिन्दगी जी सकते थे किन्तु उन्होंने माँ भारती के वैभव के लिए अपने समस्त व्यक्तिगत वैभवों का परित्याग कर दिया।

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो.9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 प्रदीप कुमार राव ने कहा कि देश की युवा पीढ़ी को नेता जी के व्यक्तित्व को अपना आदर्श मान कर, उनसे प्रेरणा लेते हुए राष्ट्र निर्माण के कार्यों मे संलग्न हो। मुश्किल से मुश्किल चुनौतियों का सामना सफलता पूर्वक किस प्रकार से किया जा सकता है, यह हम नेता जी के जीवन चरित्र से सीख सकते है। भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ अर्पित करते हुए उन्होंने बरतानी हुकुमत के समक्ष जो चुनौतियाँ खड़ी की और उन्हें भारत छोड़ने पर विवश किया, यह आज भी भारतीय इतिहास की स्वर्णिम घटना है। नेता जी तद्युगीन भारतीय युवाओं के आदर्श थे, आज के युवाओं के हैं और भविष्य के युवाओं के भी आदर्श बनें रहेंगे।

कार्यक्रम के दौरान प्रो0 हिमांशु चतुर्वेदी ने महाविद्यालय के पुस्तकालय को 80 महत्वपूर्ण पुस्तकें अनुदान में दी। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रभारी सुबोध कुमार मिश्र ने किया। इस अवसर पर डॉ0 विजय कुमार चौधरी, डॉ0 आर0एन0सिंह, डॉ0 शिवकुमार बर्नवाल, डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह, डॉ0 अभय कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती कविता मन्ध्यान, डॉ0 राजेश शुक्ला, श्रीमती शिप्रा सिंह, डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह, सुश्री दीप्ती गुप्ता, डॉ0 प्रज्ञेश कुमार मिश्र, श्री मंजेश्वर, श्री विनय कुमार सिंह सहित समस्त कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ0 राजेश शुक्ल)
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी